B.A. II History (Hon's) By - Dr. Reetu Raj

* सल्तनतकालीन इतिहास के प्रमुख स्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- इतिहास के किसी भी काल खंड का अध्ययन स्रोत के आधार पर की जाती है। प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों की तुलना में मध्यकालीन भारतीय इतिहास (सल्तनतकालीन) के स्रोतों की बहुलता है। इस काल के ऐतिहासिक साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलती है। सल्तनतकालीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए जो स्रोत उपलब्ध हैं उन्हें सुविधानुसार दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है - साहित्यिक और पुरातात्विक। साहित्यिक स्रोतों के अन्तर्गत सामान्य ऐतिहासिक ग्रन्थों, जीवनियों, यात्रा-वृतांतों, प्रशासनिक दस्तावेजों इत्यादि का उल्लेख किया जा सकता है। पुरातात्विक स्रोतों में स्मारकों, अभिलेखों एवम् सिक्कों का उल्लेख किया जा सकता है।

साहित्यिक स्रोत ⇒ सामान्य ऐतिहासिक रचनाओं में समस्त विश्व अथवा यहा-कहा मुस्लिम जगत के सामान्य इतिहास का वर्णन किया गया है और इसी संदर्भ में भारत में मुस्लिम शासन का भी उल्लेख मिलता है। ऐसी रचनाओं में प्रमुख है - मिनहाज-उल-सिराज की तबकात-ए-नासिरी। इसमें इस्लाम के उदय से पूर्व विभिन्न पैगम्बरों की जीवनी और इस्लाम की उत्पति से लेकर इल्तुतमिश द्वारा संगठित शम्सी सामंतों के दल का इतिहास है। संपूर्ण रचना 23 अध्यायों में विभक्त है जिन्हें तबकात कहा जाता है। मिनहाज की पुस्तक की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि इसमें तिथिक्रम पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है, तथापि इससे रचना का महत्व कम नहीं हो जाता है। बरनी ने अपनी पुस्तक 'तारीख-ए-फिरोजशाही' में दिल्ली सल्तनत का इतिहास इल्तुतमिश के शासनकाल के बाद से आरंभ किया और फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल के आरंभिक छह वर्षों तक इसका विस्तार किया है। इस काल के उत्तरी भारत के इतिहास के लिए यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है। बरनी ने अपने इतिहास की रचना मुख्यतः अमीर और कुलीन वर्गों के लिए की। सल्तनत काल में अनेक ऐसी रचनाएँ भी हुई जिनमें राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक-आर्थिक जीवन के विवरण के अतिरिक्त विभिन्न शासकों की नीतियों के गुण-दोषों एवम् राजनीतिक आदर्शों की भी चर्चा की गई है। बरनी के फतवा-ए-जहाँदारी में यह बात स्पष्ट तौर पर देखी जा सकती है

Scanned with CamScanner

सल्तनतकाल में अनेक प्रशस्तियों की भी रचना की गई। इसमें शासकविशेष की उपलब्धियों का गुणगान किया गया है। ऐसी प्रशस्तियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है बदरुद्दीन द्वारा रचित शाहनामा। इसमें मुहम्मद-बिन-तुगलक के कार्यकलापों का वर्णन किया गया है। इसके अलावा सूफी संतों की चरितावली, विदेशियों के यात्रा वृत्तांत, ऐतिहासिक महत्व की साहित्यिक रचनाएँ तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ भी सल्तनत-कालीन इतिहास के साहित्यिक स्रोत हैं जिनमें उस काल का महत्वपूर्ण विवरण मिलता है।

पुरातात्विक स्रोत ⇨ सल्तनतकालीन इतिहास के अध्ययन में ~~पुरातात्विक~~ पुरातात्विक स्रोतों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस समय अनेक भवनों का निर्माण हुआ। इस समय के भग्नावशेषों को देखकर तत्का-लीन कलात्मक प्रगति एवं राज्य की समृद्धि का अंदाज मिलता है। इस काल के अनेक महत्वपूर्ण भव्य इमारतें, जैसे 'कुवत-उल-इस्लाम', 'कुतुबमीनार', 'अलाई दरवाजा', 'फीरोजशाह कोटला' इत्यादि कलात्मक विकास से हमें परिचित कराती हैं। सल्तनतकाल में मस्जिदों एवं अन्य भवनों की दीवारों पर फारसी में अभिलेख भी खुदवाए गए, परन्तु शाही अभिलेखों की संख्या बहुत कम है। अधिकांश अभिलेख व्यक्तिगत हैं तथापि उनमें शासकों के नामों और तिथियों का भी उल्लेख किया गया है। सल्तनतकालीन सिक्के भी इतिहास की जानकारी के एक प्रमुख स्रोत है।

Scanned with CamScanner